जादू-टोने की चुनौती (19:8-20)

जादू-टोने के लिए अंग्रेज़ी शब्द ''occult'' लातीनी भाषा के *ओकलटुस* शब्द से निकला है, जिसका अर्थ है ''गुप्त'' और इसे गुप्त या रहस्यमय भेदों या ज्ञान के लिए इस्तेमाल किया जाता है।

व्यवस्थाविवरण 18:9-14 में जादू-टोने के कई कार्यों की सूची दी गई है जिन्हें तीन शीर्षकों में विभाजित किया जा सकता है: (1) शकुन विचार (जिसमें ज्योतिष, भाग्यफल बताना शामिल है); (2) टोन्हा (जिसमें जादू करना भी शामिल है); और (3) प्रेत विद्या। इन सभी की परमेश्वर ने निन्दा की (निर्गमन 22:18; लैव्यव्यवस्था 19:31; 20:6, 27; यशायाह 47:13, 14)। द *फॉरचून सैलरस* पुस्तक में गैरी विलबर्न ने बीसवीं शताब्दी के जादू-टोने को इन्हीं तीन शीर्षकों में बांटा है: (1) भाग्यफल बताना (जिसमें ज्योतिष, हस्तरेखा और आत्मिकी आते हैं); जादू (जिसमें, टोना और शैतान पूजा करना सम्मिलित हैं); और (3) प्रेत विद्या (जिसमें बैठकें और प्रश्नफलक शामिल हैं)। यद्यपि प्रभु ने इसकी स्पष्ट निन्दा की है, परन्तु आज यह जादू-टोने नये नियम के दिनों की तरह ही फल-फूल रहे हैं।

पौलुस के समय में जादू-टोने का केन्द्र इफिसुस था। यद्यपि अथेने का दैनिक जीवन बुद्धिवाद के आस-पास और कुरिन्थुस का अनैतिकता के आस-पास घूमता था, तो इफिसुस की दिनचर्या झाड़-फूंक में बीतती थी। इफिसुस में जादूगर, ज्योतिषी, उपाय करने वाले और भाग्यफल बताने वाले उमड़ आए थे जबकि इफिसुस मानसिक घमण्ड या नैतिक शिथिलता से इतना उत्पीड़ित नहीं था जितना दुष्ट आत्माओं के भय से।

कुरिन्थुस को उस समय की भाषा से जोड़ने के लिए संदेहपूर्ण सम्मान मिला था (अंग्रेज़ी शब्द ''Corinthianize'' होने का अर्थ व्यभिचार करना था)। इसी प्रकार, इफिसुस ने शब्दावली में जोड़ लिया: जादू करने और झाड़-फूंक करने वालों के संग्रहों को ''इफिसियों के पत्र'' कहा जाता था। सदियों बाद, शेक्सपियर ने इफिसुस की ख्याति को इन शब्दों में संक्षिप्त किया:

> कहते हैं यह नगर ठगों से भरा है,
> जैसे, आखों को धोखा देने वाले छलिये हों,
> काला जादू करने वाले जो मन ही बदल देते हैं,
> प्राण घातक जादूगरनियां जो शरीर को विकृत कर देती हैं,

छद्मवेश धारे हुए धोखेबाज़, बकबक करने वाले झांसिये,
और इस प्रकार के कई पाप के दास।[1]

यद्यपि हमें इफिसुस के आत्माओं की बातें करते रहने के विषय में सांसारिक स्रोतों ने नहीं बताया फिर भी, हम पवित्र शास्त्र से इसका अनुमान लगा सकते हैं। प्रेरितों 19:19 में हम पढ़ते हैं कि इफिसुस में पौलुस की सेवकाई के दौरान ''जादू करने वालों में से बहुतों ने अपनी-अपनी पोथियां इकट्ठी करके सब के साम्हने जला दीं, और जब उनका मूल्य जोड़ा गया, तो पचास हज़ार रुपये[2] की निकलीं।'' पचास हज़ार रुपये आज की तरह एक छोटी सी राशि थी। झाड़-फूंक, वशीकरण, आशिषों और श्रापों के बारे में बताने वाले सैकड़ों नहीं बल्कि हज़ारों चर्म पत्र भी जलाये गए होंगे।

इस पाठ में हम इफिसुस में पौलुस के तीन वर्ष तक रहने की कहानी को जारी रखते हैं। हम इस पर विशेष ध्यान देना चाहते हैं कि परमेश्वर उस अंधविश्वास के साथ कैसे पेश आया जो उस शहर के लोगों के मनों पर छाया हुआ था।

एक पुरानी चुनौती (19:8-10)

जादू-टोने की चुनौती का अध्ययन करने से पहले, हमें इस बात पर विचार करना चाहिए कि पौलुस एक पुरानी चुनौती, जो उसके साथी देशवासियों की शिक्षा की थी, से किस प्रकार पेश आया।

अपनी दूसरी यात्रा के अन्त में इफिसुस में अपने संक्षिप्त ठहराव के समय, पौलुस ने आराधनालय में वचन सुनाया था और लोगों ने उससे कुछ समय और ठहरने का आग्रह किया था। तब उसने कहा था कि उसका जाना आवश्यक है परन्तु यदि परमेश्वर ने चाहा तो वह फिर लौटेगा (18:19)। अब उसने वह वायदा पूरा किया। ''और वह आराधनालय में जाकर तीन महीने तक निडर होकर बोलता रहा'' (19:8क)। आराधनालय में तीन महीने तक बिना पिटाई या बर्खास्त किए बोलने की अनुमति मिलना पौलुस के लिए एक कीर्तिमान था![3] उसे सम्भवत: इतने लम्बे समय तक बोलने की अनुमति उसके प्रथम ठहराव के समय अच्छे प्रभाव के कारण मिली थी।[4]

आराधनालय में प्रचार करते हुए पौलुस ''परमेश्वर के राज्य के विषय में विवाद करता और समझाता रहा'' (आयत 8ख)। वाक्यांश ''परमेश्वर का राज्य'' मसीह और उसके राज्य के विषय में बताने का एक और ढंग है (देखिए 28:31)। पौलुस ने लोगों को यीशु और उसकी कलीसिया के बारे में बताया।[5]

यद्यपि आराधनालय में पौलुस की आरम्भिक स्वीकृति सामान्य से अच्छी थी और उसका अन्तिम परिणाम भी वही था। कुछ यहूदियों ने ''कठोर होकर उसकी नहीं मानी[6] बरन लोगों के साम्हने इस मार्ग को बुरा कहने लगे''[7] (19:9क)। ''मार्ग'' शब्द मसीहियत (यीशु के पीछे चलना, जो ''मार्ग'' [यूहन्ना 14:6] है) के लिए प्रयुक्त हुआ है।[8] जब

विश्वास न करने वाले यहूदियों ने लोगों में यीशु की निन्दा की, तो पौलुस ने निर्णय लिया कि अब उसे आराधनालय को छोड़ जाना चाहिए (देखिए मत्ती 7:6)। इस कारण, ''उसने उनको छोड़कर चेलों को अलग कर लिया'' (19:9ख) अर्थात, जिन्होंने मसीह और उसके राज्य के बारे में उसकी शिक्षा को मान लिया था।

पौलुस फिलिप्पी में, चेलों को नदी के किनारे; अथेने में, अरियुपगुस पर और अगोरा में कुरिन्थुस में तितुस युस्तुस के घर में वचन सिखाता था। इफिसुस में, उसे एक पाठशाला मिल गई जहां वह प्रचार कर सकता था।[9] वह ''प्रति दिन तुरन्नुस की पाठशाला[10] में विवाद किया करता था'' (19:9ग)। तुरन्नुस (जिसके बारे में वह और कुछ भी नहीं जानता था) के पास एक बड़ा कमरा था जो उसने पौलुस को भाड़े पर या उधार दे दिया था।[11] ''तुरन्नुस'' ''तानाशाह'' के लिए लातीनी शब्द है। यदि तुरन्नुस अपनी पाठशाला में सिखाता था तो हो सकता है कि उसके छात्रों ने उसे यह उपनाम दे दिया हो[12]!

वैस्टर्न टैक्सट पौलुस द्वारा दी गई शिक्षा के बारे में एक दिलचस्प नोट जोड़ देता है: ''वह प्रतिदिन ... पांचवें पहर से दसवें पहर तक सिखाता था।''[13] ''पांचवें पहर से दसवें पहर'' का समय सुबह 11 से सायं 4 बजे तक का होता होगा। उस क्षेत्र के लोग दिन के उस भाग में आराम करते थे।[14] 7 से 11 बजे सुबह, फिर 4 से 9:30 बजे सायं का समय आदर्शस्वरूप होगा। दिन के मध्य पांच घण्टे के आराम के समय में, जब दूसरे लोग आराम कर रहे होते थे और जब उस हॉल का कोई उपयोग नहीं करता, तो पौलुस हॉल में यीशु के विषय में सीखने की इच्छा रखने वालों को सिखाता था।

बाद में, पौलुस ने ध्यान दिया कि इफिसुस में वह अपने और अपने साथियों के निर्वाह के लिए हाथों से काम करता था (20:34)। फिर, न केवल वह सार्वजनिक तौर पर, बल्कि घर-घर जाकर (आयत 20) केवल दिन के समय ही नहीं, रात को भी वचन सुनाता था (आयत 31)। फिर तो, पौलुस की दिनचर्या कुछ इस प्रकार होगी: सुबह 7 से 11 बजे तक वह तम्बू बनाने का काम करता था, सुबह 11 से सायं 4 बजे तक तुरन्नुस की पाठशाला में परमेश्वर का वचन सिखाता था; सायं 4 से रात 9:30 बजे तक वह और तम्बू बनाता था; 9:30 से आधी रात 12 बजे तक वह घरों में जाकर वचन सुनाता था। इस सबसे पौलुस की एक बात का पता चलता है कि उसे वचन सिखाना अच्छा लगता था!

तुरन्नुस की पाठशाला में पौलुस का वचन सुनाने का समय उस क्षेत्र के लोगों के बारे में भी कुछ कहता है। उन्हें वचन का *अध्ययन करना अच्छा लगता है।* हर रोज़ जिस समय उनके मित्र तथा पड़ोसी दोपहर को विश्राम कर रहे होते थे, वे पौलुस से वचन सुना करते थे! यदि हम इफिसुस में होते, तो क्या हम वचन सुनने के लिए इतने उत्सुक होते! क्या हम वहां पर सीखने के उत्सुक हैं जहां हम *रहते* हैं ?

आयत 10 कहती है कि ''दो वर्ष तक यही होता रहा।'' इन दो वर्षों और तीन महीनों में पौलुस आराधनालय में सिखाता रहा था (आयत 8), (शायद) आयत 22 का ''कुछ दिन'' पौलुस द्वारा बाद में ''तीन वर्ष'' की बात कहना कुल मिलाकर तीन वर्ष हो जाता होगा (20:31)। अपनी विशेष मिशनरी यात्राओं के दौरान किसी शहर में ठहरने का पौलुस

का यह सबसे लम्बा समय था, जिससे इफिसुस में उसे मिले विलक्षण अवसरों का पता चलता है (1 कुरिन्थियों 16:9)।

पौलुस के प्रयासों के फलस्वरूप, वचन केवल सारे इफिसुस में ही नहीं फैला, बल्कि एशिया के सारे रोमी राज्य में भी फैल गया, ''यहां तक कि आसिया के रहने वाले क्या यहूदी, क्या यूनानी सब ने प्रभु का वचन सुन लिया'' (19:10ख)। पौलुस के शत्रुओं ने बाद में कहा, ''... कि केवल इफिसुस में ही नहीं, बरन प्राय: सारे आसिया में यह कहकर पौलुस ने बहुत लोगों को समझाया ...'' (आयत 26)। आसिया की सभी ''सात कलीसियाएं'' (प्रकाशितवाक्य 1:11) नहीं, तो उनमें से अधिकतर और कुलुस्से और हियरापुलिस की मण्डलियां इसी दौरान स्थापित हुई थीं (कुलुसियों 1:2; 4:13)।[15]

सब जगह सुसमाचार का प्रचार पौलुस ने ही नहीं किया। एक समझदार नेता हमेशा दूसरों को सिखाकर और उन्हें प्रेरणा देकर अपने आपको कई गुणा बड़ा बना लेता है। हमने पहले ध्यान दिया था कि इफिसुस की सेवकाई में तीमुथियुस और तीतुस सोस्थिनेस नामक एक मसीही की तरह पौलुस के साथी थे (1 कुरिन्थियों 1:1, 2)। इरास्तुस नामक एक भाई ने भी उसके साथ काम किया (प्रेरितों 19:22)। कुलुस्से से दो भाइयों इपफ्रास और अर्खिप्पुस को भी स्पष्टतया पौलुस ने ही प्रशिक्षण दिया था (कुलुस्सियों 1:7, 8; 4:12, 13, 17; फिलेमोन 2, 23)। यह भी सम्भव है कि ''मकिदुनिया से पौलुस के संगी यात्रियों'' गयुस और अरिस्तरखुस (प्रेरितों 19:29) ने उसके साथ आसिया में काम किया और हमें पौलुस के सुसमाचारीय मित्रों अक्विला और प्रिस्किल्ला को नहीं भूलना चाहिए (18:18, 19, 26)।[16]

पौलुस ने सम्भवत: इफिसुस में लोगों को परमेश्वर के वचन की अधिकतर शिक्षा तुरन्नुस की पाठशाला में ही दी (19:9, 10)। वहां वह आस-पास से आने वाले छात्रों को शिक्षा देता था। उदाहरण के लिए, पौलुस ने बाद में कहा कि वह व्यक्तिगत रूप से कुलुस्से, लौदीकिया और उस क्षेत्र के दूसरे शहरों में (जिनमें हियरापुलिस भी शामिल था, जो लौदीकिया के निकट था) नहीं गया (कुलुस्सियों 2:1)। कुलुस्से में, और सम्भवत: लौदीकिया और हियरापुलिस में सुसमाचार को इपफ्रास नामक एक आश्रित व्यक्ति ने पहुंचाया[17] (कुलुस्सियों 1:7, 8; 4:12, 13)।

मेरी कितनी इच्छा है कि हम में भी पौलुस और उसके सहकर्मियों जैसा जोश होता! फिर यह कहा जा सकता था कि हमारे आसपास रहने वाले सभी लोगों ने ''प्रभु का वचन सुन लिया'' है!

एक नई चुनौती (19:11-20)

हम इफिसुस में पौलुस की विशेष चुनौती की ओर आते हैं, जो जादू-टोने की चुनौती है। पहले पौलुस का सामना एक जादूगर से (13:6-11) और भविष्य बताने वाली आत्मा से ग्रस्त एक औरत से हुआ था (16-18), परन्तु इफिसुस में उसका सामना इतने बड़े पैमाने पर पाए जाने वाले अध्यात्मवाद और अन्धविश्वास से कभी नहीं हुआ था।

पौलुस को अधिकार दिया गया था

जब परमेश्वर किसी व्यक्ति को कोई कार्य करने के लिए देता है, तो वह उस व्यक्ति को वे अधिकार भी देता है जो उस कार्य को पूरा करने के लिए आवश्यक होते हैं। परमेश्वर ने पहले ही पौलुस के द्वारा आश्चर्यकर्म किए थे (14:8-10; देखिए 2 कुरिन्थियों 12:12), परन्तु जब पौलुस ने इफिसुस के जादू लक्षित अर्थात जादू-टोने से भरे समाज का सामना करना था, तो प्रभु ने उसे और अधिक शक्तियां दे दीं: ''और परमेश्वर पौलुस के हाथों से सामर्थ के *अनोखे काम* दिखाता था'' (प्रेरितों 19:11)। अपने स्वभाव से ही सभी आश्चर्यकर्म अनोखे होते हैं। इसलिए, ये आश्चर्यकर्म अत्यधिक अनोखे थे।

इन आश्चर्यकर्मों को करने में अपनाए जाने वाले ढंग इतने अनोखे नहीं थे: ''यहां तक कि रूमाल और अंगोछे उस की देह से छुलवाकर बीमारों पर डालते थे, और उनकी बीमारियां जाती रहती थीं; और दुष्टात्माएं उनमें से निकल जाया करती थीं''[18] (आयत 12) शास्त्र यह नहीं कहता कि लोग पौलुस से आशीष पाने के लिए अपने कपड़े उसके पास लाते थे, बल्कि शास्त्र बताता है कि ये ''रूमाल'' और ''अंगोछे'' ''उसकी देह से छुलवाते'' थे। ये वे कपड़े होंगे जो पौलुस के शरीर के साथ सामान्य ढंग से लगे होंगे। ''रूमाल'' कपड़े के छोटे-छोटे किनारे वाले टुकड़े नहीं होंगे, बल्कि पौलुस द्वारा तम्बू बनाते समय पसीना आने पर अपना मुंह पोंछने के लिए बने बड़े कपड़े के टुकड़े होंगे। उसने अपने सिर पर जैसा कि रिवाज़ था (और है) कपड़े लपेटे होंगे। एक अनुवादक ने उन्हें ''पसीने के वस्त्र'' कहा है। सम्भवत: काम करते समय अपने कपड़ों को सुरक्षित रखने के लिए कर्मचारियों द्वारा पहने जाने वाले ''अंगोछे'' ही पौलुस ने पहने थे।[19]

''अनोखे'' शब्द से संकेत मिलता है कि चंगाई का यह ढंग नियम न होकर अपवाद था, कि नये नियम के समयों में भी यह एक असामान्य घटना थी। मैं इसका उल्लेख इसलिए करता हूं क्योंकि प्रेरितों 19:12 का इस्तेमाल वे लोग बहुत अधिक करते हैं जो निर्धनों और रोगियों को धोखा देकर धनवान बनते हैं। यदि तथाकथित चंगाई देने वालों की ओर से भेजे गए सभी रूमालों और कपड़े के ''आशीषित'' वस्त्रों को इकट्ठा करके सिल दिया जाए तो निश्चय ही संसार का एक बड़ा भाग उन से ढक जाए!

जो कुछ परमेश्वर ने पौलुस के द्वारा किया वह मरकुस 16:17, 18 में की गई यीशु की प्रतिज्ञा का पूरा होना था: ''... वे मेरे नाम से दुष्टात्माओं को निकालेंगे ... वे बीमारों पर हाथ रखेंगे और वे चंगे हो जाएंगे।'' प्रभु ने ''पौलुस के हाथों से'' वे आश्चर्यकर्म किए ताकि इफिसुस के लोगों को पता चल जाए कि वह विशेष प्रकार से उसके साथ था।

ओझे परेशान हो गए थे

पौलुस की योग्यताओं से प्रभावित होने वालों में ''स्क्किवा नाम के एक यहूदी महायाजक के सात पुत्र थे'' (प्रेरितों 19:14)। ''महायाजक'' शब्द से यह संकेत मिल सकता है कि स्क्किवा महायाजक के परिवार में से था।[20] इस बात की अधिक सम्भावना है कि यह उपाधि अपने परिवार के झूठे दावों को प्रभाव देने के लिए स्व-कल्पित हो (जैसे

अमेरिका के पुराने पश्चिम में आमतौर पर पेटेन्ट दवाई जुटाने वाले लोग अपने नाम के आगे ''डॉक्टर'' अथवा ''प्रोफेसर'' लगा लेते थे)। ''यदि इन शब्दों का आविष्कार लूका के दिनों में हुआ होता तो वह अवश्य ही उन्हें उद्धहरण चिह्नों में रखता।''

अंक ''सात'' का उपयोग इस परिवार के ''रहस्य के वातावरण'' को और गहरा देता था। अंक सात का विशेष महत्व यहूदियों में ही नहीं, अन्धविश्वासियों में भी माना जाता था।[21]

लूका ने इन सात पुत्रों को ''यहूदी जो झाड़ा फूंकी करते फिरते थे'' कहा (आयत 13क)। ''ओझा'' एक लिप्यान्तरित मिश्रित यूनानी शब्द है, जो ''शपथ'' के क्रिया रूप के साथ ''बाहर'' शब्द को मिलाता है।[22] इसका इस्तेमाल सामान्यत: भूतों को ''शपथ के साथ बाहर'' निकालने के लिए किया जाता है। बाहर के और बाइबल के लेखकों ने दर्ज किया कि नये नियम के समयों में कई यहूदी दुष्टात्माओं को निकाल सकने का दावा करते थे (मत्ती 12:27; लूका 11:19)।[23]

आयत 13 ही वह जगह है जहां सारी बाइबल में ''ओझा'' शब्द मिलता है।[24] यीशु कोई ओझा नहीं था। उसने दुष्टात्माओं को निकालते समय कभी शपथ का प्रयोग नहीं किया। उसने केवल इतना ही कहा, ''... चुप रह, और ... निकल जा'' (मरकुस 1:25) और आत्माएं उसकी आज्ञा मानती थीं।[25] इसी प्रकार, जब प्रेरितों ने दुष्टात्माओं को निकाला तो उन्होंने इसकी उपज नहीं की। बिना किसी शिष्टाचार के, उनके यह कहने से, ''मैं तुझे यीशु मसीह के नाम से आज्ञा देता हूं, कि ... निकल जा ...'' (प्रेरितों 16:18) और दुष्टात्मा निकल जाती थी।[26]

क्या ये यहूदी ''ओझा'' सचमुच दुष्टात्माओं को निकाल सकते थे? सम्भव है,[27] परन्तु मुझे विश्वास है कि ये सातों निम्नलिखित कारणों से पूरी तरह धोखेबाज़ थे[28]: (1) उनके कार्य के आधार पर ध्यान दें। एक ईमानदार आदमी चोरों की मांद में काम करने से बचता है। ये लोग इफिसुस के अप्रकट ठगों से पूरी तरह मिले हुए थे। (2) उनके बारे में कहा गया है कि वे ''झाड़ा-फूंकी करते फिरते थे'' (आयत 13)। KJV में इसका अनुवाद ''घुमक्कड़'' हुआ है। धोखेबाज़ों के लिए किसी एक स्थान पर अधिक देर तक रुकना ख़तरनाक हो सकता है। वे आमतौर पर घूमते रहते थे। (3) उन्होंने पौलुस के शब्दों का इस्तेमाल करके दुष्टात्मा निकालने का निर्णय लिया (आयत 13)। यदि उन्हें वैसी ही सफलता मिली होती जैसी पौलुस को मिली थी तो उन्होंने पौलुस के ''जादुई शब्दों'' का प्रयोग क्यों किया? (4) अविश्वासी यहूदी होने के कारण वे शैतान के साथ थे, चाहे उन्हें इसका अहसास था या नहीं (प्रकाशितवाक्य 2:9)। यीशु ने कहा कि शैतान यदि अपनी सेवा करने वाले दुष्टात्माओं को निकाले तो वह मूर्ख होगा (मत्ती 12:26) परन्तु शैतान मूर्ख *नहीं* है।

पौलुस की सफलता को देखकर, स्क्किवा के पुत्रों ने पौलुस के ''झाड़ा-फूंकी'' की यह देखने के लिए कोशिश की कि शायद इससे उनका कोई काम बन जाए। वे ''यह करने लगे कि जिनमें दुष्टात्मा हो उन पर प्रभु का नाम यह कहकर फूंकें'' (प्रेरितों 19:13ख)

अन्धविश्वासी लोग कुछ निश्चित शब्दों को रहस्यमयी, जादुई शक्तियां मानते थे। चर्मपत्र ''गुप्त'' अस्पष्ट भाषा थी, जिसमें इसके स्वामी को उसकी इच्छा अनुसार मिलने की ''गारन्टी'' होती थी। इन सात पुत्रों ने निर्णय लिया कि पौलुस का ''गुप्त शब्द'' ''यीशु'' था।[29] क्योंकि वे यीशु को व्यक्तिगत तौर पर नहीं जानते थे, इसलिए उन्होंने कहा, ''जिस यीशु का प्रचार *पौलुस* करता है, मैं तुम्हें उसी की शपथ देता हूं'' (आयत 13ग)।

ऐसे लगता है जैसे दुष्टात्मा उन्हें चिढ़ा रही हो:

> पर दुष्टात्मा ने उत्तर दिया, [30] कि यीशु को मैं जानती हूं, और पौलुस को भी पहचानती हूं; [31] परन्तु तुम कौन हो? और उस मनुष्य ने जिस में दुष्ट आत्मा थी; उन पर लपककर, [32] और उन्हें वश में लाकर, उन पर ऐसा उपद्रव किया, कि वे नंगे और घायल होकर उस घर से निकल भागे (आयतें 15, 16)।

अलौकिक शक्ति से भरपूर (देखिये मरकुस 5:2-4), दुष्टात्मा से ग्रस्त आदमी ने भावी[33] ओझाओं पर आक्रमण कर उनके कपड़े फाड़ दिए[34], उन्हें घायल कर दिया और प्राण बचाकर भाग निकलने के लिए मजबूर कर दिया। ''जब उन्होंने [अपने समारोह में यीशु के नाम का] किसी नये हथियार का सही ढंग से इस्तेमाल न कर पाने की तरह कोशिश की, तो यह उनके हाथों में ही चल गया।'' ये लोग यह समझने में नाकाम रहे कि यह कोई छिपा हुआ जादू-टोना नहीं, बल्कि ''यीशु के नाम में *विश्वास*'' था जिससे यीशु के नाम से सामर्थ के काम हुए (प्रेरितों 3:16)।

यीशु की महिमा हुई

सारे शहर में ओझाओं की असफलता की बात फैल गई थी: ''और यह बात इफिसुस के रहने वाले यहूदी और यूनानी भी सब जान गए'' (19:17क)। यह स्पष्ट था कि पौलुस परमेश्वर की ओर से स्वीकृत था और तथाकथित अद्‌भुत काम करने वाले वे लोग परमेश्वर की ओर से तिरस्कृत थे। इसका एक फल तो यह मिला कि ''उन सब पर भय छा गया'' (आयत 17ख)। वैसा ही भय जैसा कि यरूशलेम में परमेश्वर द्वारा हनन्याह और सफीरा को दण्ड देने के बाद छाया था (5:10)। दूसरा फल यह था कि ''प्रभु यीशु के नाम की बड़ाई हुई'' (19:17ग)। जादू करने वालों को पता चल गया था कि बिना सोचे समझे यीशु के नाम का इस्तेमाल स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो सकता है!

एक अतिमहत्वपूर्ण परिणाम यह था कि इस घटना से कुछ मसीहियों को होश आ गई। स्पष्टतया कुछ इफिसुस वासी बचपन से ही जादू-टोने में लग हुए थे, मसीही बनकर उन्होंने अपनी मूर्तिपूजा वाली बातों को पूरी तरह से नहीं त्यागा था। क्योंकि धर्म के नाम पर ''*जादू*'' में वास्तविक *आश्चर्यकर्मों* से इतनी स्पष्ट विभिन्नता थी, इसलिए ''जिन्होंने विश्वास किया था, उन में से बहुतेरों ने आकर अपने-अपने कामों को मान लिया और प्रगट किया'' (आयत 18)।[35] NASB ने इसे निरन्तर चलने वाली क्रिया बताया है: ''आकर,

अपन-अपने कामों को मानते और प्रकट करते रहे ...।'' पहले एक मसीही आकर अपनी गलतियों को मानकर रोते हुए आगे बढ़ा; फिर दूसरा आया; फिर दर्जन भर और आ गए; जब तक सभी पुरुष और स्त्रियां अतीत के अपने अन्धविश्वास के साथ अपने सम्बन्ध तोड़ने के लिए उमड़ न पड़े। वाक्यांश ''अपने-अपने कामों को *प्रगट किया*'' को रेखांकित कर लें। याद रखें कि ''जादू-टोने'' का मूल अर्थ है ''छिपा हुआ।'' जादू-टोने के जगत का साजो-सामान ''गुप्त ज्ञान'' था (और है), जिसे केवल कुछ चुने हुए लोगों को ही बताया जाता है। उन रहस्यों का भंडा फोड़ने के लिए जादू-टोने से अपने सारे सम्बन्ध तोड़ना आवश्यक था।[36]

झाड़-फूंक में यीशु के नाम का प्रयोग करने के विफल प्रयास से कलीसिया के भीतर के लोग ही प्रभावित नहीं थे, बल्कि कलीसिया के बाहर के बहुत से लोग भी प्रभावित थे।[37] इस कारण ''और जादू करनेवालों [मसीही और गैर मसीही दोनों] में से बहुतों ने अपनी-अपनी पोथियां इकट्ठी करके सबके साम्हने जला दीं, और जब उनका दाम जोड़ा गया, तो पचास हज़ार रुपये की निकलीं'' (19:19)। इन पोथियों में झाड़-फूंक, वरदान या श्राप देने, प्रेम में सफल होने के ढंग, आत्माओं को निकालने के उपाय, भविष्य बताने की विधियां आदि भरी पड़ी थीं। हिन्दी के अनुवाद ''रुपये'' की जगह ''चांदी के सिक्के'' अधिक उचित है, जो सम्भवत: यूनानी मुद्रा थी।[38] इसे ड्राक्मा कहा जाता था जो रोमी दीनार की तरह चांदी का सिक्का होता था, और उसका मूल्य लगभग एक आम आदमी की एक दिन की मजदूरी के बराबर होता था। उस आग के महत्व को देखने के लिए, अपने क्षेत्र में एक दिन की मिलने वाली मजदूरी को पचास हज़ार से गुणा कीजिए! लाखों, करोड़ों रुपये आग में झोंक दिए गए थे!

कोई चकित हो सकता है कि लोगों ने अपनी पोथियां बेचकर उससे मिले धन को प्रभु के कार्य में क्यों नहीं लगाया। जिन्होंने अपने ''इफिसियों के पत्र'' आग में जलाए थे, वे एक संदेश देना चाहते थे कि वे अतीत से निकल आए हैं, और चाहते हैं कि सब लोग इसे जान लें! (देखिए मत्ती 3:8.) फिर, वे नहीं चाहते थे कि इन शैतानी दस्तावेजों से किसी और व्यक्ति को श्राप मिले।

परिणामस्वरूप, ''प्रभु का वचन बलपूर्वक फैलता गया और प्रबल होता गया'' (आयत 20)।[39] इफिसुस की चुनौती का सामना अविश्वसनीय ढंग से किया गया था।

चुनौती

इफिसुस की उस आग के धुएं को ऊपर उठते देखकर, हमें पूछना चाहिए, ''परमेश्वर हमारे जीवनों में आग की तुलना कैसे करना चाहता है?''

शैतानी कामों से पूरी तरह सम्बन्ध तोड़ लें

अति स्पष्ट प्रासंगिकता यह है कि परमेश्वर चाहता है कि हम जादू-टोने से अपना किसी भी प्रकार का सम्बन्ध तोड़ लें। मसीही लोगों को जन्मपत्रियों, टेवों, प्रश्न फलकों,

[40] भाग्य बताने वाले से सम्बन्ध नहीं रखना चाहिए।[41] जादू-टोने के बहुत से ख़तरे हैं:

(1) उस ज्ञान को पाने की इच्छा का ख़तरा जिसे परमेश्वर हमें देना नहीं चाहता (व्यवस्थाविवरण 29:29)। ''सब कुछ जो जीवन और भक्ति से सम्बन्ध रखता है'' बाइबल में प्रकट कर दिया गया है (यूहन्ना 14:26;[42] 2 पतरस 1:3; 2 तीमुथियुस 3:16, 17; कुलुस्सियों 1:28)। उत्तर ढूंढ़ने के लिए, ''हम पक्के रास्ते से चलने के बजाय शॉर्टकट देखते हैं।'' याद रखिए कि प्रतिबन्धित ज्ञान की इच्छा के कारण ही मनुष्य गिरा था (उत्पत्ति 3:1-7)।

(2) अनन्त सच्चाइयों को जानने के बजाय घृणापूर्ण जिज्ञासाओं को सन्तुष्ट करने की कोशिश का ख़तरा। जादू-टोने के ''प्रकाश'' नीचे की बातों पर केन्द्रित होते हैं; बाइबल पाप और उद्धार, स्वर्ग और नरक के बारे में बताती है।

(3) परमेश्वर पर भरोसा रखने के बजाय अपने जीवनों को मनुष्य-केन्द्रित करने की अनुमति देने का ख़तरा। जादू-टोने का संसार कहता है, ''योजनाओं में तुम्हारी व्यक्तिगत समस्याओं का महत्व है और अपने ही प्रयासों से तुम उन समस्याओं का समाधान कर सकते हो।'' जितनी लगन से कोई जादू-टोने में लग जाता है, उतना ही वह परमेश्वर से दूर हो जाता है।

(4) अपने मनों को शैतान के नियन्त्रण में छोड़ने का ख़तरा। जादू-टोने के क्षेत्र में प्रवेश करने वाला, शैतान के इलाके में प्रवेश कर जाता है। जादू-टोने की बहुत सी बातों में इच्छा को समर्पित करना होता है (''अपने मन को खाली छोड़ दें,'' आदि)। जादू-टोना हर बात में शैतान को आपके जीवन पर नियन्त्रण करने का अवसर देता है। हनन्याह ने शैतान को अपने मन में प्रवेश करने की अनुमति दी (देखिए प्रेरितों 5:3[43]); यदि आप उसे अपने मन में आने की अनुमति देते हैं तो वह आपके मन में भी डाल देता है।

(5) सच्चाई से भटककर बुराई में जाने और नाश होने का ख़तरा। जादू-टोने को बढ़ाने का शैतान का उद्देश्य वही है जो परमेश्वर की इच्छा के विपरीत जाने के लिए किसी को उत्साहित करने का। वह चाहता है कि लोग प्रभु के नहीं, उसके पीछे लगें। वह चाहता है कि सब लोग स्वर्ग में परमेश्वर के साथ स्वर्ग में नहीं, बल्कि उसके साथ नरक में रहें। परमेश्वर अपने वचन में हमें जादू-टोने से दूर रहने के लिए स्पष्ट आदेश देता है!

''इस संसार के ईश्वर'' (2 कुरिन्थियों 4:4) द्वारा अन्धे हुए गैर मसीही को जन्मपत्रियां, कुण्डलियां, प्रश्नफलक, भाग्यफल[44] हानि रहित लग सकता है, परन्तु एक मसीही व्यक्ति जिसे वचन द्वारा रोशनी मिल चुकी है, जानता है कि वे रैटल स्नेक (विषधर सर्प विशेष जिसकी पूंछ से चलते समय खनखनाहट का शब्द होता है) की तरह ख़तरनाक हैं। मसीही नीति बिना किसी शर्त के ऐसी बातों को ''छुओ मत'' की है। जादू-टोने में ''थोड़ी सी'' दिलचस्पी ''थोड़े से'' गर्भवती होने की तरह है।

पाप भरे अतीत से पिछले सारे बन्धन तोड़ दें

आप कहेंगे, ''लेकिन मेरा जादू-टोने से कुछ भी लेना-देना नहीं।'' चाहे न भी हो,

हमारे इस पाठ में आपके लिए ज़ोरदार संदेश है। अपने पाप भरे अतीत से सारे बन्धन तोड़ना सुनिश्चित करें।

लिखे हुए के अनुसार, जब हम मन फिराकर मसीही बनते हैं तो पिछले पापों से हमारे सारे बन्धन टूट जाते हैं (प्रेरितों 2:38)। परन्तु, व्यवहार में सब कुछ एकदम छोड़ देना कठिन होता है। इफिसुस के बहुत से लोग जिन्होंने विश्वास किया था, अभी भी अपने पुराने जादू-टोने में लगे हुए थे (19:18)।[45] उसी प्रकार, हो सकता है कि हम भी अभी पाप से जुड़े हों जो हमारे लिए एक शक्तिशाली आकर्षण है। इसमें झूठ बोलने से लेकर अपना आयकर छुपाने, कामुक मनोरंजन से लेकर अश्लील चित्र देखना तक शामिल हो सकता है।

एक जवान आदमी बपतिस्मा लेने के कई सप्ताह बाद, एक मीटिंग में प्रचारक के पास *प्लेब्वाय* मैगज़ीनों का एक बड़ा बॉक्स ले आया। ''अब जबकि मैं मसीही बन गया हूं मैं इन्हें अपने पास नहीं रख सकता,'' वह कहने लगा। प्रचारक और उसने मिलकर वे किताबें नष्ट कर दीं। कई सप्ताह बीत गए और उसी जवान आदमी ने फिर से मीटिंग में प्रचारक को अपने हाथ में एक बड़ा लिफाफा दिखाया। उसने वह लिफाफा प्रचारक के मेज़ पर रखा और भोली सूरत बनाकर कहा, ''ये वे तस्वीरें हैं जो मैंने उन मैगज़ीन से आपको देने से पहले काट ली थीं।'' पाप भरे अतीत से सारे बन्धनों को तोड़ना कठिन है।

हम में से कइयों के अपने निजी [धूनी की तरह सेकने के लिए] तथा पाप भरे विचार और ऐसी आदतें होंगी जिन्हें हमने अपने मनों और जीवनों में पनाह दे रखी है!

सारांश

जादू-टोना करके इफिसुस के लोग गलत कर रहे थे परन्तु आत्मा के संसार में विश्वास करके वे ठीक कर रहे थे। बाद में पौलुस ने उन्हें लिखा:

> परमेश्वर के सारे हथियार बान्ध लो; कि तुम शैतान की युक्तियों के साम्हने खड़े रह सको। क्योंकि हमारा यह मल्लयुद्ध, लोहू और मांस से नहीं, प्रधानों और अधिकारियों से है और इस संसार के अन्धकार के हाकिमों और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में हैं (इफिसियों 6:11, 12)।

दुष्टात्मा अब किसी भी व्यक्ति की इच्छा के विरुद्ध उसको अपने वश में नहीं कर सकती, परन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि यदि हम उसे अनुमति दें तो शैतान हमारे जीवनों पर नियन्त्रण नहीं कर सकता। बुराई की शक्तियां अब चमत्कार नहीं कर सकती (भलाई की शक्तियों से बढ़कर नहीं), परन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि शैतान असावधान लोगों को धोखा नहीं दे सकता (प्रकाशितवाक्य 20:10)। आइए सतर्क रहें कि हमारा ''विरोधी शैतान गर्जने वाले सिंह की नाईं इस खोज में रहता है कि किसको फाड़ खाये'' (1 पतरस

5:8)। ''हम उस की युक्तियों से अनजान नहीं'' रह सकते (2 कुरिन्थियों 2:11)।

यदि हम हमेशा प्रभु के निकट रहें, तो हमें शैतान से डरने की आवश्यकता नहीं (याकूब 4:7)। यूहन्ना ने हमें यह आश्वासन दिया: ''... क्योंकि जो तुम में है, वह उससे जो संसार में है, बड़ा है'' (1 यूहन्ना 4:4)। दूसरी ओर, यदि मसीह आप में *नहीं* है, तो वह जो इस संसार में है, आपसे अधिक शक्तिशाली है! यह बात हल्के से लेने वाली नहीं। आत्मिक युद्ध जीतने के लिए आपको यीशु की सहायता चाहिए! यदि आपने अभी उसका नाम नहीं लिया और बपतिस्मे में उसे नहीं पहना (गलतियों 3:26, 27), तो आपको अभी उसे पहन लेना चाहिए। मसीही बनने के बाद, यदि आपने अपने हृदय और जीवन में अभी कुछ बात रख छोड़ी है जिससे शैतान आप पर हावी हो जाता है, तो आपको इफिसियों के उत्साह की आवश्यकता है। ''अपने कामों को मानकर'' अपने भाइयों के साम्हने उन्हें ~~प्रकट कर दें (प्रेरितों~~ 19:18; देखिए प्रेरितों 8:24[46]; याकूब 5:16)!

पाद टिप्पणियां

[1] शेक्सपियर, *द कॉमेडी ऑफ ऐरर्ज़,* 1.2.97-102। [2]हिन्दी अनुवाद में पचास हजार रुपए पाठक को वर्तमान प्रचलित मुद्रा के द्वारा समझाने के लिए दिए गए हो सकते हैं, पर मूल्य में यह पचास हजार चांदी के सिक्के हैं। [3]इसकी तुलना थिस्सलुनीके में उन तीन सप्ताहों से कीजिये (17:2, 3)। [4]यह भी सम्भव है कि उसे परमेश्वर का भय मानने वालों में मिलने वाली सफलता की अपेक्षा यहां कम सफलता मिली, सो यहूदियों को इतनी जल्दी क्रोध नहीं आया। [5]''प्रेरितों के काम, भाग-1'' में ''अंतिम तैयारी'' पाठ में प्रेरितों 1:3 पर नोट्स देखिये। [6]कुछ अनुवादों में ''विश्वास न करने वाले'' या इसके समान अनुवाद मिलते हैं। जिस यूनानी शब्द का यहां इस्तेमाल किया गया है उसका अर्थ आज्ञा न मानना ही है परन्तु उसमें से यह अर्थ निकलता है कि उस आज्ञा को न मानने का कारण अविश्वास था। उद्धार दिलाने वाले विश्वास का आज्ञा मानने के साथ चोली दामन का साथ है। [7]यूनानी शब्द का अनुवाद ''लोगों'' एक धार्मिक समुदाय के लिए तकनीकी शब्द हो सकता है। इस कारण कुछ अनुवादों में आयत 9 में ''मंडली के सामने'' है। [8]''प्रेरितों के काम, भाग-2'' के पृष्ठ 105 पर पाद टिप्पणी 30 देखिये। [9]अमेरिका में कलीसिया के प्रारम्भिक दिनों में, प्रचारक नये क्षेत्र में जाता है व किसी पाठशाला के भवन के इस्तेमाल की अनुमति लेकर, हर रात वहां प्रचार करता था। सैकड़ों समुदायों में कलीसिया की स्थापना इसी प्रकार से हुई। [10]यूनानी शब्द के अनुवाद ''पाठशाला'' का सम्बन्ध ''फुरसत'' या ''खाली समय'' से है। कई लोगों का विचार है कि तुरन्नुस की पाठशाला एक व्यायामशाला में लगती थी। उन दिनों व्यायामशाला आज की तरह नहीं, बल्कि शरीर तथा मन दोनों के लिए होती थी, अर्थात वहां व्यायाम भी होता था और शिक्षा भी दी जाती थी।

[11]यह सम्भव है कि तुरन्नुस एक मसीही था और उसने पौलुस को वह भवन बिना कोई शुल्क लिए इस्तेमाल के लिए दे दिया था। [12]यदि ऐसा है, तो जरूरी नहीं कि उसका अपमान हो। कई बार चुभने वाले उपनाम यूं ही पड़ जाते हैं। [13] यद्यपि अधिक अच्छे माने जाने वाले अनुवादों में यह वाक्य नहीं मिलता, परन्तु अधिकतर विद्वानों का मत है कि सम्भवत: उस स्थिति के लिए यह एक सही वाक्य है। [14]एक प्राचीन लेखक ने लिखा है कि ''प्रात: 1 बजे के बजाय सायं 1 बजे अधिक लोग सोते होंगे।'' [15]पृष्ठ 184 पर मानचित्र देखिये। [16]आसिया के तुखिकुस और त्रुफिमुस ने बाद में पौलुस के साथ जाकर काम किया है (प्रेरितों 20:4; अन्य पद); सम्भावना है कि उन्हें भी पौलुस के द्वारा परिवर्तित तथा शिक्षित किया गया था। [17]स्पष्टत: इपफ्रास पौलुस के साथ थोड़ी दूर तक गया। वह रोम में पौलुस के साथ था (कुलुस्सियों 4:12, 13) और उसे पौलुस के ''साथ कैदी'' भी कहा गया है (फिलेमोन 23)। [18]एक बार फिर, डॉक्टर लूका

ने बीमारी तथा दुष्टात्मा से ग्रस्त होने में अन्तर किया। [19]ये ''असाधारण आश्चर्यकर्म'' हमें उन लोगों का स्मरण कराते हैं जो यीशु के वस्त्र छूकर चंगे हो जाते थे (मरकुस 5:25-29; 6:56)। हमें वह समय भी स्मरण आता है जब बीमार लोग प्रतिज्ञा करते थे कि पतरस की परछाई भी उन पर पड़ जाए (''प्रेरितों के काम, भाग-1'' के पृष्ठ 176 पर 5:15 पर नोट्स देखिये)।[20] ''प्रेरितों के काम, भाग-1'' के पृष्ठ 130 पर प्रेरितों 4:6 पर नोट्स देखिये। यूनानी शब्द के अनुवाद ''महायाजक'' का अनुवाद सामान्यत: ''महायाजकों'' तभी होता है जब ये शब्द बहुवचन में हो (मत्ती 2:4; आदि)। एक वचन में (जैसे यहां है) इसका अनुवाद सामान्यत: ''*हाई* प्रीस्ट'' किया जाता है (प्रेरितों 4:6; आदि)। इस कारण KJV में यहां पर ''हाई प्रीस्ट'' अर्थात उच्च याजक है।

[21]''एक सातवीं पुत्री की सातवीं पुत्री'' के पास भविष्य बताने की योग्यता मानी जाती थी। [22]आयत 13 में यूनानी शब्द का अनुवाद ''मैं शपथ देता हूं'' ''शपथ'' का क्रिया रूप है। [23]मैं ''दावा'' शब्द का इस्तेमाल करता हूं क्योंकि पवित्र शास्त्र हमें यह निष्कर्ष निकालने के लिए बाध्य नहीं करता कि ये यहूदी वास्तव में दुष्टात्माओं को निकाल सकते थे। मत्ती 12 (और लूका 11) में यीशु का तर्क भी ऐसा ही है कि यहूदी लोग वास्तव में दुष्टात्माओं को निकाल सकते थे या नहीं; मुख्य बात यह है कि यीशु पर आरोप लगाने वालों का *मानना* था कि उनके साथी यहूदी दुष्टात्माओं को निकाल सकते थे। [24]इसका क्रिया रूप भी एक ही बार मिलता है और वहां इसका अनुवाद ''मैं [तुम्हें] शपथ देता हूं,'' अर्थात ''मैं तुझे जीवते परमेश्वर की शपथ देता हूं'' है (मत्ती 26:63)। [25]देखिये मत्ती 8:16; मरकुस 5:8; 9:25; लूका 4:35। [26]कुछ धार्मिक समुदायों के तथाकथित ''ओझाओं'' के संस्कार परमेश्वर की ओर से नहीं, बल्कि मध्ययुग के अंधविश्वासों से निकले हैं। [27]नये नियम के दिनों में, न केवल भलाई की शक्तियों के पास आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ थी, बल्कि एक सीमित मात्रा में बुराई की शक्तियां भी ऐसा काम करती थीं। जब आश्चर्यकर्म करने की योग्यता जाती रही, तो भलाई और बुराई की शक्तियों, दोनों के पास ही यह सामर्थ न रही। ''प्रेरितों के काम, भाग-2'' के पृष्ठ 201 पर ''दुष्टात्माएं: दुष्ट अलौकिक जीव'' और ''प्रेरितों के काम, भाग-2'' के पृष्ठ 185 से ''पवित्र आत्मा क्या करता है?'' विशेष लेख देखिये। [28]मेरा मानना है कि वे शमौन (8:9-13) और बार-यीशु (13:6-12) की तरह झूठमूठ के चमत्कार करने वाले धोखेबाज होंगे। [29]बाइबल के बाहर के लोगों का भी यही निर्णय था कि ऐसा ही हुआ। एक प्राचीन दस्तावेज मिला है जिसमें ''मैं तुम्हें इब्रानियों के देवता, यीशु के नाम की शपथ देता हूं'' लिखा पाया गया है। यह निश्चित बीमारियों को चंगा करने के लिए किए जाने वाले झाड़-फूंक का एक भाग था। [30]इस आत्मा ने उस आदमी के भीतर से बात की (मरकुस 3:11)।

[31]दुष्टात्माओं को सीमित अलौकिक ज्ञान था। 16:17 पर नोट्स देखिये। [32]कुछ अनुवादों में ''दोनों पर'' है, जिससे यह सुझाव मिलता है कि उन सात में से केवल दो ने ही यह प्रयोग करने की कोशिश की। हिन्दी बाइबल में यूनानी शब्द के अनुवाद ''उन पर'' का अर्थ ''दोनों या अधिक पर'' हो सकता है। [33]अर्थात, बनने की इच्छा रखने वाले। [34]आवश्यक नहीं कि यूनानी शब्द के अनुवाद ''नंगे'' का अर्थ ''बिना कपड़ों के'' हो। इसका अर्थ ''कम कपड़े पहने'' हो सकता है परन्तु, यह स्पष्ट लगता है, कि उन लोगों को न केवल अपमानित होना पड़ा बल्कि वे लज्जित भी हुए। [35]संदर्भ में कलीसिया की किसी प्रकार की सार्वजनिक सभा का संकेत मिलता है जिसमें गैर सदस्य भी आ सकते थे। इसके अलावा, हमें उस सभा के कारण और स्थान का कोई विवरण नहीं मिलता। [36]''मनोरंजन'' के लिए किए जाने वाले जादू में भी जो अलौकिक साधनों का इन्कार करता है, जादू के ''रहस्यों'' की सुरक्षा करने का प्रयास किया जाता है। सामान्यत: किसी खेल का मूल्य उस पर किए जाने वाले श्रम पर नहीं बल्कि इस पर आधारित होता है कि ''वह ट्रिक कैसे किया गया।'' खरीद लिए जाने वाले ट्रिक को लौटाया नहीं जा सकता क्योंकि ''अब तो आप को उसका रहस्य पता चल गया।'' जादू के रहस्यों को आम जनता में बताने पर किसी जादूगर को जादूगरी के समाज से बाहर निकाला जा सकता है। [37]''जादू करने वालों में से बहुतों ...'' में मसीही लोग हो सकते हैं, परन्तु यह अधिक सम्भव लगता है कि यदि अधिकतर नहीं तो इनमें से बहुत से लोग गैर मसीही थे। [38]NIV में

देखिये। [39]प्रेरितों के काम में लूका की यह पांचवीं प्रगति रिपोर्ट है। [40]मिल्टन ब्रेडले की गेम कम्पनी प्रश्न फलक को खेल कहकर बेच सकती है, परन्तु यह कोई खेल नहीं है। यह जादू-टोना है।

[41]संसार के किसी भी भाग में पाई जाने वाली ऐसी बातों का स्थानीय उदाहरण दिया जा सकता है; इसमें किसी विशेष स्थान पर पाए जाने वाले टोने आदि की सामान्य बातों का वर्णन किया जा सकता है। [42]यह प्रतिज्ञा प्रेरितों के साथ थी, हमारे साथ नहीं; 2 पतरस के हवाले से पता चलता है कि प्रेरितों से की गई यीशु की प्रतिज्ञा पूरी हो गई है। [43]''प्रेरितों के काम, भाग-1'' के पृष्ठ 158 पर प्रेरितों 5:3 पर नोट्स और ''प्रेरितों के काम, भाग-2'' के पृष्ठ 185 पर ''पवित्र आत्मा क्या करता है ?'' पर लेख देखिये। [44]एक बार फिर, स्थानीय लोगों की आवश्यकता के अनुसार इस सूची को व्यक्तिगत बनाया जाना चाहिए। [45]कई लेखक यह नहीं मानते कि इफिसुस के मसीही अभी भी जादू-टोने में लगे हुए थे। वे लगे हुए थे या नहीं, इस तथ्य से कि उनके पास जादू-टोने की पोथियां थीं और उन्होंने अपने पापों को नहीं माना था संकेत मिला था कि किसी सीमा तक उन्होंने जादू-टोने की दुनिया से अपना सम्बन्ध बनाए रखा था। [46]''प्रेरितों के काम, भाग-2'' के पृष्ठ 75 पर प्रेरितों 8:24 पर नोट्स देखिये।